अतुल विनोद मीणा

छात्र-कक्षा-9वीं

अक्कलकुआं, नंदुरबार-1,

मुझे जीने दो!

सावला मैं, मुझे मारते क्यों?

मैं हूँ तो तुम हो,

तुम जीते हो, मुझे जीने दो।

एक बार मारने पर मैं मरता नहीं,

तुम बार-बार मारते क्यों?

तुम जीते हो, मुझे जीने दो।

तुम मुझे प्यार देते नहीं,

फिर भी मैं तुम्हें हंसत-हंसते सब देता हूँ,

तुम जीते हो, मुझे जीने दो।

तुम मुझे पानी देते नहीं,

तो तुम मुझे मारते क्यों?

तुम जीते हो, मुझे जीने दो।

तुम आगे का भविष्य हो,

तो मैं तुम्हारे जीने की राह हूँ,

तुम जीते हो, मुझे जीने दो।

विजय कनौजिया

अम्बेडकर नगर ,उत्तर प्रदेश

अकेला रह नहीं पाता

डाकिया अब कोई पाती

तुम्हारी क्यों नहीं लाता

लाख करता हूँ कोशिश मैं

अकेला रह नहीं पाता

मिलन की आस लेकर

आज भी बैठा हूँ मैं लेकिन

मगर अब आजकल कोई

यहाँ मिलने नहीं आता..।।

चहकतीं थीं कभी चिड़ियां

तो मैं संगीत बुनता था

पिरोने को पुष्प माला

सुगंधित पुष्प चुनता था

आँखें पलकें बिछाए

देखती हैं आज भी रस्ता

कोई खुशियों के आंसू अब

यहाँ देकर नहीं जाता..।।

मुझे है फ़िक्र उनकी

आजकल किस हाल में होंगे

ना जाने कौन सी रंगत

और किस चाल में होंगे

उन्हें शायद मिला होगा

कोई अब और मनुहारी

"विजय" मुझको तुम्हारे बाद

कोई अब नहीं भाता..।।